दूरभाष : 0120-4089803 • फैक्स : 0120-4089813
भारत सरकार
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
आईएसओ 9001 : 2015 प्रमाणित
शिक्षा मंत्रालय, स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग
के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्था
ए-24-25, इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-62, नोएडा (उ.प्र.)

Telephone : 0120-4089803 • Fax : 0120-4089813
GOVERNMENT OF INDIA
NATIONAL INSTITUTE OF OPEN SCHOOLING (NIOS)
ISO 9001 : 2015 Certified
An autonomous Institution under
Ministry of Education (MoE), Deptt. of SE&L
A-24-25, Institutional Area, Sector-62, NOIDA (U.P.)

प्रो. सरोज शर्मा
अध्यक्ष

Website : www.nios.ac.in
E-mail : cm@nios.ac.in

Prof. Saroj Sharma
Chairperson

आमुख

अत्यंत हर्ष का विषय है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सुझावों पर विचार प्रक्रिया को प्रेरित करने तथा शिक्षा नीति को लागू करने की समझ विकसित करने के लिए "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : शिक्षा में भारतीयता का पुनरुत्थान" नामक संपादकीय पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शैक्षिक सुधारों, शिक्षा में नवाचार एवं परिवर्तन तथा शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनः समाकलन हेतु सुझावों की एक लंबी श्रृंखला को प्रस्तुत किया है। किसी भी नीति की सफलता उस नीति को समझने ,उचित रीति से विश्लेषण करने तथा उसे लागू करने के सतत प्रयासों में निहित होती है। प्रस्तुत संपादित पुस्तक में 18 अध्यायों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत विश्लेषण तथा उनके क्रियान्वयन की योजना प्रस्तुत करने का मार्ग प्रशस्त किया है।

प्रस्तुत पुस्तक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विभिन्न पहलुओं को समाहित करने का प्रयास बहुत ही प्रभावी तरीके से किया गया है, साथ ही पाठकों को शिक्षा नीति को समझने एवं लागू करने के लिए उचित रीति को अपनाने हेतु प्रेरित करने का प्रयास यह पुस्तक करती है।

अपने आप में यह अनूठी शिक्षा नीति है जिसमें मातृभाषा को शिक्षण,अधिगम एवं अनुसंधान के माध्यम के रूप में स्थापित करने हेतु विशेष प्रयास करने पर बल देने का मंतव्य दिया है, साथ ही बहुभाषिकता ,बहुसांस्कृतिक शिक्षा तथा शिक्षा एवं संस्कृति के संबंध को स्थापित करने हेतु स्पष्ट दिशानिर्देश दिए गए है। इस पुस्तक में बहुभाषिकता, भाषा विकास संबंधी नीति निर्देश, भारतीय भाषाओं का संरक्षण एवं संवर्धन ,भारतीय मूल्यों एवं ज्ञान परंपरा पर आधारित भारतीय शिक्षा नीति जैसे विषयों पर बहुत ही सार्थक विमर्श करने का सफलतम प्रयास किया गया है।

यह स्पष्ट है कि यदि शिक्षा में बदलाव लाने हैं, तो शिक्षकों में भी बदलाव लाने होंगे अर्थात शिक्षकों को शिक्षा में होने वाले बदलावों के प्रति सचेत करने, उनको प्रशिक्षित करने एवं उक्त बदलावों में अपना अधिकतम योगदान देने हेतु योग्य बनाने का कार्य करना आवश्यक है। इस हेतु शिक्षक शिक्षा एवं शिक्षकों के संबंध में इस पुस्तक में व्यापक विमर्श कर एक नवीन दृष्टि प्रदान की गई है। आज हमारा प्रयास सबका साथ सबका विकास है, जिसमें समावेशी शिक्षा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। शिक्षा एवं समावेशन, उच्च शिक्षा की नियामक प्रणाली तथा गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा हेतु किन प्रयासों की आवश्यकता है, यह सब इस पुस्तक में सम्मिलित करने का उल्लेखनीय कार्य पुस्तक के महत्व को बढ़ाने वाला है।

शिक्षा में यदि परिवर्तनों की शुरुआत करनी है, तो विद्यालय शिक्षा से करनी होगी, शिक्षा को सर्वांगीण विकास करने का माध्यम बनाना, मातृभाषा में स्थानीय परिवेश को ध्यान में रखते हुए शिक्षा प्रदान करना, पाठ्यचर्या में आमूलचूल परिवर्तन करना, खेल आधारित शिक्षा, कला आधारित शिक्षा तथा नवीन शिक्षण विधियों का समावेशन उपरोक्त परिवर्तनों हेतु राह प्रदान करने का कार्य करेंगे।

अंततः मैं कहना चाहूंगी कि यह पुस्तक शिक्षा के भारतीयकरण एवं भारतीय मूल्यों के संवर्धन हेतु एक नई चर्चा को आमंत्रित करने का प्रयास करती है। पुस्तक को इस रूप में लेकर आने के लिए मैं संपादक तथा लेखकों को साधुवाद देती हूं, जिन्होंने अपने महत्वपूर्ण प्रयासों से पुस्तक को इस रूप में प्रस्तुत करने हेतु लगन से कार्य किया है।

पुस्तक के सफल प्रकाशन हेतु अनंत शुभकामनाएं एवं बधाई।

(प्रो. सरोज शर्मा)
अध्यक्ष , राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

सन्देश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर प्रकाशित की जा रही संपादित पुस्तक हेतु सन्देश लिखते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के द्वारा दिए गए सुझावों एवं नवीन परिवर्तनों की समझ विकसित करने हेतु तथा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु *"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : शिक्षा में भारतीयता का पुनरुत्थान"* पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पुस्तक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विभिन्न पहलुओं को समाहित करने का प्रयास बहुत ही सराहनीय तरीके से किया गया है, साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति को समझने एवं लागू करने के लिए उचित तरीको को अपनाने हेतु प्रेरित करने का यत्न यह पुस्तक करती है। प्रस्तुत संपादित पुस्तक के विभिन्न अध्यायों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनेक पहलुओं पर विस्तृत विश्लेषण तथा उनके क्रियान्वयन की योजना प्रस्तुत करने का मार्ग प्रशस्त किया है। यह पुस्तक भारतीय शिक्षा प्रणाली के कायाकल्प, शिक्षा के भारतीयकरण एवं भारतीय मूल्यों के संवर्धन का एक सार्थक एवं सुनियोजित प्रयास है।

यह शिक्षा नीति इसलिए विशेष है क्योंकि यह मातृभाषा को सीखने एवं सिखाने के माध्यम के रूप में स्थापित करती हैं, साथ ही बहुभाषिकता तथा बहुसांस्कृतिक शिक्षा हेतु सुनियोजित प्रयास करने की प्रेरणा भी प्रदान करती है। यह पुस्तक भारतीय ज्ञान परम्परा, महिला शिक्षा, भाषा विकास, भारतीय कला एवं संस्कृति, नियामक प्रणाली , शिक्षक शिक्षा, बहुभाषिकता, समतामूलक एवं समावेशी शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर प्रभावी प्रस्तुति करती हैं। पुस्तक को इस रूप में प्रस्तुत करने के लिए मैं संपादक तथा लेखकों को बधाई देता हूं।

पुस्तक के सफल प्रकाशन हेतु मैं संपादक प्रो. शिरीष पाल सिंह को असीम शुभकामनायें एवं बधाई प्रेषित करता हूँ।

दिल्ली

31 जनवरी 2023

महेंद्र कपूर

राष्ट्रीय संघटन मंत्री

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म. प्र.)
DOCTOR HARISINGH GOUR VISHWAVIDYALAYA, SAGAR (M. P.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय / A Central University)

प्रो. नीलिमा गुप्ता
Prof. Neelima Gupta
कुलपति / Vice-Chancellor
Ex Vice-Chancellor- CSJM University, Kanpur
- Tilka Manjhi Bhagalpur University, Bhagalpur
- Munger University, Munger (Addl. Charge)

☎ (Office) : (07582) - 264796
e-mail : vcneelimagupta@gmail.com
vc@dhsgsu.edu.in
website : www.dhsgsu.edu.in

क्र. कुलपति / 2022 / 392

दिनांक : 20 दिसम्बर, 2022

:: संदेश ::

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का उद्देश्य शिक्षा की एक नई प्रणाली का निर्माण करना है जिसमें शिक्षार्थियों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि की असमानता को दूर करके सभी को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान की जा सके। प्रो. शिरीष पाल सिंह, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा संपादित पुस्तक "राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 : शिक्षा में भारतीयता का पुनरुत्थान" भारतीय शिक्षा की समकालीन प्रवृत्तियों एवं चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की विभिन्न संस्तुतियों का आकलन प्रस्तुत करती है।

शिक्षा को भाषा, कला एवं संस्कृति से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। इसी अर्थ में भारत की शिक्षा के लक्ष्यों को व्याख्यायित करने और इसकी पुनर्संरचना करने की आवश्यकता है। इस पुस्तक में विभिन्न विद्वान लेखकों के लेखों का संग्रह है जो नई शिक्षा नीति के इसी लक्ष्य की पूर्ति करते हैं।

मुझे विश्वास है कि छात्र एवं पाठक इस पुस्तक के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर लाभान्वित होंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को आगे बढ़ाने, अकादमिक उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रावधान हैं। मैं पुस्तक के संपादक को बधाई देती हूँ जिन्होंने इस अत्यंत उपयोगी संकलन को एक उत्कृष्ट संदर्भ सामग्री के रूप में तैयार करके एक सराहनीय कार्य किया है।

प्रो. शिरीष पाल सिंह द्वारा प्रकाशित की जा रही पुस्तक "राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 : शिक्षा में भारतीयता का पुनरुत्थान" के सफल प्रकाशन एवं इसकी समग्र सफलता हेतु मैं अपनी शुभकामनाएँ सम्प्रेषित करती हूँ।

(प्रो. नीलिमा गुप्ता)

प्राक्कथन

21वीं सदी की शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय शिक्षा को एक नयी दृष्टि देने का काम कर रही है जो शिक्षा व्यवस्था में बनी हुई खाई को पाटने के साथ-साथ शैक्षिक सुधारों के नए आयाम और शिक्षा-ढ़ांचे की दुरुस्त रूप-रेखा को प्रस्तुत करता है। शिक्षा-नीति की उद्घोषणा के पश्चात् निरंतर बुद्धिजीवी वर्गों के बीच चर्चाओं के माध्यम से समझ बनाने की कोशिश की जा रही है। इस शिक्षा नीति ने भारतीय भाषाओं से लेकर भारतीय ज्ञान परंपरा को संरक्षित एवं संवर्धित करने हेतु कई बड़े कदम उठाये हैं। यह शिक्षा नीति एक परिवर्तनकारी शिक्षा नीति के रूप में उभर कर सामने आई है जिसमें विद्यालयी शिक्षा के ढांचे में परिवर्तन करने के साथ-साथ उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में मल्टीपल एँट्री और एक्जिट की व्यवस्था को लागू करने की बात की गयी है। इस शिक्षा नीति में समावेशी शिक्षा के लिए नए पैमाने निर्धारित किये गए हैं। व्यावसायिक शिक्षा हेतु नयी संकल्पना को रचते हुए और शिक्षकों के उत्तरदायित्व को बढ़ाते हुए इस शिक्षा नीति ने एक नए प्रतिमान को स्थापित करने का प्रयास किया है। यह शिक्षा नीति बहु-विषयक दृष्टिकोण के साथ ही शिक्षा में नवीनतम शिक्षणशास्त्र के प्रयोग पर बल देती है। यह शिक्षा नीति भारतीय समाज के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस प्रकार शिक्षा नीति से संबंधित अनेकानेक लेख लिखे जा रहे हैं तथा पाठकों का एक वर्ग अपनी जिज्ञासा की प्रतिपूर्ति हेतु ऐसी पुस्तक की प्रतीक्षा बड़ी ही बेसब्री से कर रही है जो शिक्षा-नीति के विभिन्न आयामों पर विषय-विशेषज्ञों के विचारों को प्रस्तुत करें जिससे उनकी समझ बन सके। यह शिक्षा नीति विद्यालयी और उच्च शिक्षा तथा गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा तक सभी की समान पहुँच को सुनिश्चित करने के लिए जो गहन चिंतन किया है, उसे मूर्त रूप में परिवर्तित करने का प्रयास करती है।

प्रस्तुत पुस्तक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं तथा विषयगत अवधारणाओं का विभिन्न अध्यापकों एवं आचार्यों द्वारा समीक्षात्मक विश्लेषण किया गया है एवं उनके क्रियान्वयन हेतु मार्ग प्रशस्ति का सुझाव भी दिया है। इस पुस्तक में 18 लेखक समूह के लेखों को संपादित किया गया है। पुस्तक के विभिन्न अध्यायों के लेखक अपने अनुशासन के अनुभवी विषय-विशेषज्ञ और शिक्षाविद् है जिनकी विद्वता से शिक्षा जगत् लाभान्वित हुए हैं। इनके लेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निहित भारतीय ज्ञान परंपरा, भाषा संवर्धन, समावेशी शिक्षा जैसे विषयों को केंद्र बिंदु में रख कर लिखे गयें हैं जिसमें वर्तमान शिक्षा की जरूरतों एवं शिक्षा-नीति की अनुशंसाओं को ध्यान में रखते हुए उसके क्रियान्वयन तथा भविष्य के लिए सुझाव प्रदान किये गये हैं।

इस संपादित पुस्तक का पहला अध्याय '*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: भारतीय भाषाओं का संरक्षण एवं संवर्धन*' है जिसे '*अजय कुमार राय*' द्वारा लिखा गया है। प्रस्तुत अध्याय भारतीय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन के संबंध में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में किये गये विभिन्न प्रावधानों का वर्णन करता है। इस लेख में भारत की समस्त क्षेत्रीय भाषाओं, आदिवासी भाषाओं, शास्त्रीय एवं प्राचीन भाषाओं तथा

विदेशी भाषाओं के शिक्षण हेतु अनेक सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं। दूसरा अध्याय '*जय शंकर सिंह एवं आलोक गार्डिया*' द्वारा '*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा विकास संबंधी निर्देश*' पर लिखा गया है जिसमें वर्तमान शिक्षा नीति में पूर्व प्राथमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा एवं उच्चतर शिक्षा तथा शिक्षा के अन्य उच्चतर संस्थानों में भाषा के स्वरुप, शिक्षण-अधिगम तथा उससे संबंधित अन्य प्रावधानों पर ध्यान आकर्षित किया गया है। संपादित पुस्तक का तीसरा अध्याय '*बहुभाषिकता के संरक्षक के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*' विषय पर आधारित है जिसे '*अनामिका यादव एवं शिरीष पाल सिंह*' द्वारा लिखा गया है जिसमें भाषा की शक्ति एवं बहुभाषावाद को ध्यान में रखते हुए मातृभाषा, स्थानीय भाषा एवं बहुभाषी समाज की संस्कृति को संरक्षित करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है और भाषा नीति के नजरिये से भाषा की भाषाई विविधता को समझाने का प्रयास किया गया है। '*अंजलि शर्मा*' द्वारा '*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: कुछ नए एवं परिवर्तनीय आयाम*' विषय को चौथे अध्याय में जोड़ा गया है। इस अध्याय में शिक्षकों एवं अभिभावकों को बच्चे की क्षमताओं के प्रति संवेदनशील बनाने के साथ शिक्षार्थियों को उनके सीखने के तरीके और अपनी क्षमता एवं अभिरुचि के अनुरूप कार्यक्रमों को चुनने का लचीलापन प्रदान करने पर बल दिया गया है। इस पुस्तक का पांचवां अध्याय '*महिला शिक्षा को उड़ान देती राष्ट्रीय शिक्षा नीति: 2020*' पर केन्द्रित है जिसे '*जितेन्द्र सिंह गोयल*' द्वारा लिखा गया है जो बालिकाओं और ट्रांसजेंडर छात्रों के लिए जेंडर समावेशी निधि, एकेडमिक क्रेडिट बैंक, अनुसूचित जाति एवं जनजाति तथा पिछड़े वर्गों की बालिकाओं को छात्रवृत्ति की आवश्यकतों का विश्लेषण करता है और लैंगिक असमानताओं को खत्म करने की ओर इंगित करता है। '*भारतीय मूल्यों और ज्ञान परम्परा पर आधारित भारतीय शिक्षा नीति 2020*' विषय पर छठवां अध्याय '*विनोद कुमार शनवाल*' द्वारा लिखा गया है जिसमें इस बात की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है कि सभी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति केंद्र के रूप में बदला जा सकता है। इस नीति का उद्देश्य शिक्षार्थियों के बीच भारतीयता की भावना को गहराई से पैदा करना ही नहीं है वरन् उनके विचारों में भारतीयता की भावना की आत्मा, बुद्धि, कर्म, कौशल, मूल्यों और स्वभावों को विकसित करना है।

सातवाँ अध्याय '*अंकुल पांडेय*' द्वारा '*नई शिक्षा नीति की विशेषताएँ एवं चुनौतियाँ*' विषय पर लिखा गया है जिन्होंने इंगित किया कि नई शिक्षा नीति से छात्रों के लिए स्वरोजगार और रोजगार के अधिक से अधिक अवसरों का निर्माण हो सकेगा जो भारत को एक जीवंत केंद्र में बदल सकती है किन्तु मातृभाषा में शिक्षण और ऑनलाइन शिक्षण कार्य बहुत ही पेचीदा है जो इस शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में एक बड़ी समस्या भी है। '*हेमचन्द्र*' द्वारा '*गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय: भारतीय उच्च शिक्षा व्यवस्था हेतु एक नया और भविष्योंन्मुखी दृष्टिकोण*' विषय पर आठवां अध्याय इस बात को केंद्रित करता है कि देश की उच्च शिक्षा सशक्त और समृद्धशाली तभी हो पाएगी जब 21वीं सदी में युवा विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में भौतिक शास्त्रीय ज्ञान और आध्यात्मिक ज्ञान के अतिरिक्त बौद्धिक जिज्ञासा, वैज्ञानिकता, रचनात्मकता, सेवा भावना, विज्ञान, तकनीकी कला, साहित्य, वाणिज्य, भाषा, स्वच्छता आदि सभी क्षेत्रों में आधुनिक तकनीकी कौशलों से युक्त होकर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर

अपने व्यक्तित्व के विकास के साथ राष्ट्र को भी समृद्ध कर सकेंगे। नौवें अध्याय में '*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में भारतीय भाषा, कला और संस्कृति के विकास के लिए वैद्युतिक साधन*' विषय पर विश्लेषणात्मक लेख 'डॉ. कुमार' द्वारा लिखा गया है जिसमें उन्होंने इस बात पर बल दिया है कि भाषा, कला और संस्कृति के विकास के लिए आकाशवाणी, दूरदर्शन, संगणक, सान्द्र मुद्रिका (सी.डी.), इन्टरनेट, चलदूरभाष, टेपरिकॉर्डर, वीडियो और ऑडियो रिकॉर्डर एवं भाषा प्रयोगशाला जैसे वैद्युतिक साधनों का प्रयोग किया जाना चाहिए। '*राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020): मातृभाषा, संस्कृति और ज्ञान परंपरा का संवर्धन*' शीर्षक पर दसवें अध्याय में '*शैलेन्द्र सिंह*' द्वारा इस तथ्य को उजागर करने का प्रयास किया गया है कि '*अतुल्य भारत*' और '*वसुधैव कुटुम्बकम्*' की संकल्पना को मातृभाषा, संस्कृति और ज्ञान परंपरा को संवर्धित करते हुए साकार किया जा सकता है जिसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अपना अहम् योगदान दे रही है। इस पुस्तक के ग्यारहवें अध्याय में '*सुहासिनी बाजपेयी*' ने '*उच्चतर शिक्षा की नियामक प्राणाली: गतिशील एवं भविष्योन्मुखी परिवर्तन*' विषय पर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि उच्च शिक्षा के नियामक स्वरुप के क्रियान्वयन में हमें अतीत की त्रुटियों से सीखते हुए उचित योजना के अनुरूप कार्य करने की आवश्यकता है। '*प्रतिभा सिंह*' द्वारा बारहवें अध्याय में '*शिक्षक शिक्षा: चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ*' शीर्षक पर विश्लेष्णात्मक रूप से यह बताने का प्रयास किया है कि शिक्षण एक कला है जिसे विशेष प्रशिक्षण द्वारा ही सीखा जा सकता है जिसके लिए आवश्यक है कि अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में प्रवेश, पाठ्यक्रम, शिक्षण-अभ्यास, एन.सी.टी.ई., पारदर्शी मूल्याँकन, शिक्षण-अधिगम उपकरण के व्यवहारिक प्रयोग संबंधी चुनौतियों से निपटना होगा।

'*राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में निहित विद्यालयी शिक्षा की सिफारिशों का आलोचनात्मक विश्लेषण*' शीर्षक पर तेरहवें अध्याय में '*मनोज कुमार सक्सेना और आशीष कुमार*' द्वारा कहा गया कि यह शिक्षा नीति भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए नई आशाओं के साथ एक नया सवेरा है किन्तु जिस प्रकार विद्यालयी ढांचे में परिवर्तन किया गया है, वह सिर्फ एक विशेष वर्ग को इंगित करता है। इसलिए विद्यालय में 100% सकल नामांकन अनुपात चुनौतीपूर्ण कार्य है। संपादित पुस्तक के चौदहवें अध्याय में '*जितेन्द्र कुमार रायगुरु*' द्वारा '*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक के उत्तरदायित्व*' पर इस बात पर बल दिया गया कि शिक्षकों के उत्तरदायित्व में बदलाव करते हुए इस शिक्षा नीति ने विषय ज्ञान को व्यावसायिक विकास के लिए महत्वपूर्ण माना है, साथ ही कक्षा वातावरण के निर्माता, आदर्श व्यक्तित्व एवं मार्गदर्शक के रूप में शिक्षार्थियों के समक्ष प्रस्तुत होने की बात की है। '*लोहंस कुमार कल्याणी*' ने पंद्रहवें अध्याय में '*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: समतामूलक तथा समावेशी शिक्षा*' पर सबका ध्यान केंद्रित करते हुए कहा है कि शिक्षा नीति यह सुनिश्चित करती है कि सभी को समान शिक्षा मिले इसके लिए वंचित समूह पर विशेष ध्यान रहेगा। सोलहवें अध्याय में '*नरेंद्र कुमार पाल*' द्वारा '*NEP-2020 के सकारात्मक भविष्य एवं वर्तमान चुनौतियों के संदर्भ में समीक्षात्मक विश्लेषण*' में इस बात की ओर इंगित किया है कि देशीय एवं वैश्विक ज्ञान आधारित समाज अर्थव्यवस्था की जरूरत, शिक्षा में गुणवत्ता की वृद्धि, शैक्षिक नवाचार और संशोधन को बढ़ावा देने से भारतीय शिक्षा व्यवस्था को भविष्य में वैश्विक स्तर तक ले जाने में इस शिक्षा

नीति का योगदान श्रेष्ठ रहेगा। *'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षक-शिक्षा की दशा एवं दिशा'* पर *'सरोज राय'* द्वारा सतरहवें अध्याय में इस बात की ओर ध्यानाकर्षित करते हुए कहा है कि यह शिक्षा नीति भारतीय मूल्यों एवं मान्यताओं के अनुरूप होने के कारण भारतीय संस्कृति, भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के उचित समन्वय के साथ बड़े स्तर पर प्रतिभावान एवं योग्यतावान शिक्षक वर्ग को तैयार करने में मील का पत्थर साबित होगी। इस पुस्तक के अंतिम एवं अठ्ठारहवें अध्याय में *'शशि रंजन'* द्वारा *'राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विद्यालयी शिक्षा में परिवर्तन: पाठ्यचर्या एवं शिक्षणशास्त्रीय भूमिका'* विषय में यह उल्लेख किया गया है कि रटने की प्रणाली को कम किया जाये और समग्र विकास एवं 21वीं सदी के कौशल जैसे आलोचनात्मक सोच, रचनात्मक, वैज्ञानिक अभिवृत्ति, बहुभाषावाद, समस्या-समाधान, नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी और डिजिटल साक्षरता को प्रोत्साहित करने के लिए विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर पाठ्यक्रमों, पाठ्यपुस्तकों, शिक्षणशास्त्र एवं मूल्याँकन प्रणाली को रूपांतरित किया जाए।

नि:संदेह इस पुस्तक में सम्मिलित अध्याय शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों एवं नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगें क्योंकि प्रत्येक अध्याय के लेखकों ने अपनी निष्ठा और समीक्षात्मक दृष्टि से शिक्षा जगत् से जुड़ें प्रत्येक पहलुओं का विस्तार करने का प्रयास किया है। इस पुस्तक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की अनुशंसाओं को समझाने का प्रयास किया गया है तथा उन अनुशंसाओं के क्रियान्वयन हेतु मार्ग प्रशस्त करने का सुझाव दिया गया है। इस पुस्तक का उद्देश्य यह है कि शिक्षा के मूल तत्व तथा बच्चों में भारतीय ज्ञान, परंपरा, संस्कृति, भाषा का संरक्षण एवं संवर्धन को बनाए रखने हेतु हर संभव प्रयास किया जाए। आशा ही नहीं मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तक की समीक्षात्मक सामग्री शिक्षा संबंधी आपके विचारों एवं भविष्य के संदर्भो को स्पष्ट करने में मार्गदर्शक का कार्य करेगी।

अंत में इस संपादित पुस्तक हेतु सभी लेखकों के द्वारा किये गये प्रयासों के लिए धन्यवाद देता हूँ।

नई दिल्ली — प्रो. शिरीष पाल सिंह

दिनांक 18/11/2023 — संपादक

लेखक सूची

डा. अजय कुमार राय
सहायक आचार्य-शिक्षा शास्त्र
राजकीय महाविद्यालय हाटा, कुशीनगर,
उत्तर प्रदेश, भारत

डा. आलोक गार्डिया
सह आचार्य, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रो. (डॉ.) शिरीष पाल सिंह
आचार्य, मीडिया अनुसंधान एवं मुल्यांकन,
केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
श्री अरबिंदो मार्ग, नई दिल्ली, भारत

डॉ. विनोद कुमार शनवाल
अध्यक्ष, शिक्षा और प्रशिक्षण विभाग, गौतमबुद्ध
विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, भारत

डॉ. हेमचन्द्र
सहायक आचार्य, बी.एड.
लालबहादुर शास्त्री राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्दूचैड़, नैनीताल, भारत

डॉ. शैलेन्द्र सिंह
सहायक आचार्य (शिक्षा संकाय)
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

डा. प्रतिभा सिंह
सहायक आचार्य. बी. एड. विभाग,
एल. एन. मिश्र कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेन्ट्,
मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

डा. जय शंकर सिंह
सहायक आचार्य, शिक्षा शास्त्र,
सतीश चंद्र कालेज, बलिया
उत्तर प्रदेश, भारत:

अनामिका यादव
पी-एच. डी. शोधार्थी, शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,
वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

डा. अंजलि शर्मा
सह आचार्य, शिक्षा विभाग,
केंद्रीय विश्वविद्यालय, राजस्थान, भारत

डॉ. अंकुल पांडेय
वाणिज्य विभाग, शासकीय शहीद केदारनाथ कॉलेज,
मऊ, गंजरीवा, मध्यप्रदेश, भारत

डा. कुमार
सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग,
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, क. जे. सोमैया परिसर
विद्याविहार, मुम्बई, भारत

डॉ सुहासिनी बाजपेयी
सहायक आचार्य
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,
वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

प्रो. मनोज कुमार सक्सेना
आचार्य, शिक्षा स्कूल एवं परिसर निदेशक
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, भारत

आशीष कुमार
शोधार्थी, शिक्षा स्कूल
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला, भारत

लोहंस कुमार कल्याणी
सहायक आचार्य, शिक्षक-शिक्षा विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा,
उत्तर प्रदेश, भारत

डॉ. सरोज राय
सहायक आचार्य-शिक्षा विभाग,
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूं, नागौर, राजस्थान, भारत

डॉ॰ जितेन्द्र सिंह गोयल
सहायक आचार्य,
शिक्षाशास्त्र विभाग, भारतीय महाविद्यालय,
फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

डा. जितेन्द्र कुमार रायगुरु
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जे. सोमैया परिसर
विद्याविहार, मुम्बई, भारत

डा. नरेन्द्र कुमार पाल
सहायक आचार्य, महात्मा गांधी राष्ट्रीय हिंदी
विश्वविद्यालय, (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), वर्धा,
महाराष्ट्र, भारत

डा. शशि रंजन
सहायक आचार्य, शिक्षा-विभाग, इन्वर्टिस
विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

विषय सूची

आमुख .... *v*

सन्देश .... *vii-ix*

प्राक्कथन .... *xi*

लेखक सूची .... *xv*

1. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: भारतीय भाषाओं का संरक्षण एवं संवर्धन** **1**
   अजय कुमार राय

2. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा विकास सम्बन्धी नीति निर्देश** **7**
   जय शंकर सिंह एवं आलोक गार्डिया

3. **बहुभाषिकता के संरक्षक के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** **23**
   अनामिका यादव एवं शिरीष पाल सिंह

4. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: कुछ नए एवं परिवर्तनीय आयाम** **31**
   अंजली शर्मा

5. **महिला शिक्षा को उड़ान देती राष्ट्रीय शिक्षा नीति: 2020** **43**
   जितेन्द्र सिंह गोयल

6. **भारतीय मूल्यों और ज्ञान परम्परा पर आधारित भारतीय शिक्षा नीति 2020** **49**
   विनोद कुमार शनवाल

7. **नई शिक्षा नीति की विशेषताएँ एवं चुनौतियाँ** **59**
   अंकुल पांडेय

8. **गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय: भारतीय उच्च शिक्षा व्यवस्था हेतु एक नया और भविष्योंन्मुखी दृष्टिकोण** **67**
   हेमचन्द्र

9. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में भारतीय भाषा, कला और संस्कृति के विकास के लिए वैद्युतिक साधन** **73**
   डॉ. कुमार

10. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020): मातृभाषा, संस्कृति और ज्ञान परंपरा का संवर्धन. 79
शैलेन्द्र सिंह

11. उच्चतर शिक्षा की नियामक प्रणाली: गतिशील एवं भविष्योन्मुखी परिवर्तन. 89
सुहासिनी बाजपेयी

12. शिक्षक शिक्षा: चुनौतियॉ एवं सम्भावनाएँ. 95
प्रतिभा सिंह

13. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में निहित विद्यालयी शिक्षा की सिफारिशों का आलोचनात्मक विश्लेषण. 103
मनोज कुमार सक्सेना एवं आशीष कुमार

14. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक के उत्तरदायित्व 111
जितेन्द्र कुमार रायगुरु

15. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: समतामूलक तथा समावेशी शिक्षा 119
लोहंस कुमार कल्याणी

16. NEP-2020 के सकारात्मक भविष्य एवं वर्तमान चुनौतियों के संदर्भ में समीक्षात्मक विश्लेषण 127
नरेन्द्र कुमार पाल

17. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षक-शिक्षा की दशा एवं दिशा 135
सरोज राय

18. राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विद्यालयी शिक्षा में परिवर्तन : पाठ्यचर्या एवं शिक्षणशास्त्रीय भूमिका 143
शशि रंजन